आभासी प्रदर्शनी

(फेसबुक व यू–ट्यूब लाइव)

''विश्व प्रसिद्ध भीमबेटका''

इं0 गाँ0 रा0 क0 के0 की डॉ0 याशोधर मठपाल संग्रह पर आधारित

(03 जूलाई, 2020)

आदि दृश्य विभाग

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

नई दिल्ली

आदिम मानवों ने स्वयं के क्रियाकलापों व अपने चतुर्दिक् घटित होने वाली घटनाओं को चित्रात्मक शैली के माध्यम से शैल गुहाओं की भित्तियों तथा शैलखंडों पर अंकित किया तथा अपनी आने वाली संततियों के लिए एक स्वर्णिम इतिहास प्रस्तुत किया। यह शैलचित्र पूर्णतः अक्षर व शब्द रहित होते हुए भी आदिम समाज की विभिन्न झलकियों को दृश्यरूपेण हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं, यथा आखेट दृश्य, खाद्यसंग्रहण, पशुपालन, कृषि कार्य, मातृत्व भाव, नृत्य–वादन, निर्माण कार्य तथा ऐतिहासिक कालीन अश्वांकन, युद्ध दृश्य, लेख आदि। भारतीय उपमहाद्वीप में इन दृश्यों का अंकन विभिन्न स्थानों से प्राप्त होते हैं। भारत के मध्यप्रदेश में भोपाल से 40 किमी0 दक्षिण में रायसेन जिले में स्थित भीमबेटका पुरास्थल प्रागैतिहासिक शैलचित्रों की अजायबघर है जहाँ उच्च–पुरापाषाण काल से मध्यकाल तक के चित्रों के प्रमाण प्राप्त होते हैं। भीमबेटका पुरास्थल की खोज भारतीय शैलचित्र कला के 'पितामह' पद्मश्री डॉ0 विष्णुश्रीधर वाकणकर जी ने वर्ष 1957 में किया था, जिसे यूनेस्को ने वर्ष 2003 में विश्वदाय पुरास्थल की सूची में स्थान प्रदान किया।

भीमबेटका का विहंगम दृश्य

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग द्वारा आदिम मानवों के इतिहास को समेटे हुए विश्वदाय पुरास्थल भीमबेटका की ऐतिहासिक विरासत के महत्व को प्रसिद्ध पुरातत्वविद् और कलाकार पद्मश्री डॉ0 यशोधर मठपाल द्वारा किए गए प्रतिकृतियों के माध्यम से आम–जनमानस व युवाओं तक अपने शानदार प्रागैतिहासिक अतीत की झलक को प्रसारित करने के उद्देश्य से ''ग्लोरियस भीमबेटका'' विषय पर फेसबुक तथा यूट्यूब के माध्यम से आभासी प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 03 जुलाई, 2020 को किया गया।

मठपाल द्वारा बनाई गई भीमबेटका की शैलचित्र कला के वाटर कलर रिप्रोडक्शन पर आधारित है। भीमबेटका के इन चित्रों को रिकॉर्ड करने का कार्य प्रो0 एच0 डी0 सांकलिया द्वारा डॉ0 मठपाल जी को सौंपा गया था। इस प्रक्रिया के माध्यम से, उन्होंने चित्रकला की एक अनूठी शैली विकसित की है। लगभग चार दशक पहले उन्होंने सम्पूर्ण पुरास्थल के चित्रों का ड्राइंग भीट पर दस्तावेजीकरण किया था। जिसे वर्श 1988 में शोध के उद्देश्य तथा अभिलेखीय संग्रहण व संरक्षण के लिए इं0 गाँ0 रा0 क0 के0 के द्वारा अधिग्रहित किया गया था। यह सभी चित्र वर्तमान में इं0 गाँ0 रा0 क0 के0 के सांस्कृतिक अभिलेखागार में संरक्षित हैं। संरक्षित इन चित्रों में 374 में 316 चित्र भीमबेटका पुरास्थल से और 58 इसके समीपवर्ती स्थलों से हैं। इस आभासी प्रदर्शनी के माध्यम से लगभग 125 चयनित चित्रों को प्रदर्शित किया गया जिन्हें 5 उपवर्गों में विभाजित कर प्रदर्शित किया गया– (1) प्रागैतिहासिक जीव–जन्तु, जिसके अंतर्गत कल्पित पशुचित्रण एवं अन्य पशु–पक्षियों के चित्रों को प्रदर्शित किया गया; (2) आखेट एवं खाद्यसंग्रहण, इसमें विभिन्न पशुओं के शिकार सम्बन्धी दृश्य, शिकार के लिए प्रस्थान करते हुए शिकारियों के झुण्ड, मत्स्य आखेट, उनके प्रस्तरादि निर्मित औजार, पेड़ों से फल संचय दृश्य, मधु संचय दृश्य आदि को प्रदर्शित किया गया; (3) पशुपालन दृश्यों के अंतर्गत चरवाहे व जानवरों के दृश्य, पशुओं को हांकने व पकड़ने वाले दृ श्य, पशुओं के चरने (ळव्रंपदह) आदि; (4) पारिवारिक दृश्य एवं अन्य मानवीय क्रियाकलाप में मातृदेवी, नृत्य दृश्य, भोजन, निर्माण कार्य, परिवार के दृश्य आदि; (5) ऐतिहासिक दृश्य के अंतर्गत युद्ध दृश्य, अश्वांकान, अश्वारोहण, गजारोहण, राजकीय दृश्य आदि को प्रदर्शित किया गया।

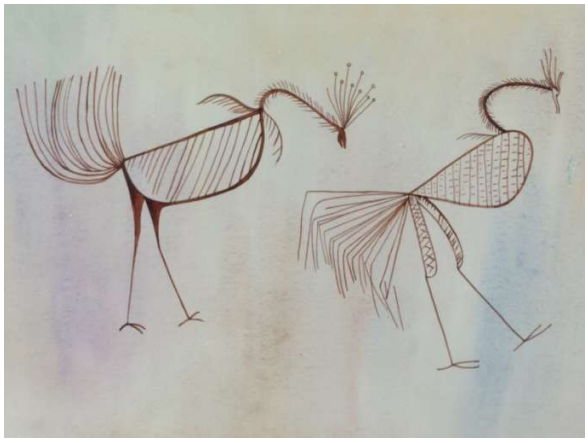

प्रागैतिहासिक पशु–पक्षी अंकन के चित्र

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के माननीय सदस्य सचिव प्रो0 सच्चिदानन्द जोशी जी ने भीमबेटका पुरास्थल व उसके खोजकर्ता पद्मश्री डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर के विषय में स्मरणातीत अंशों को प्रस्तुत किया तथा प्रागैतिहासिक भारतीय शैलचित्रा कला के महत्त्व के आधार पर इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा इस विषय पर विस्तृत रूप से अनुसन्धान के उद्देश्य से एक पृथक विभाग आदि दृश्य विभाग (शैलकला विभाग) की स्थापना के विषय में बताया। इसके साथ ही पद्मश्री डॉ0 यशोधर मठपाल जी के विषय में विचार व्यक्त करते हुए उनके द्वारा भारतीय संस्कृति, समाज व राष्ट्र को क्या देन है इसपर भी संक्षिप्त प्रकाश डाला। डॉ0 मठपाल द्वारा शैलचित्र कला विषय के साथ ही भारतीय पौराणिक साहित्य पर भी अध्ययन किया गया। उन्होंने लगभग 200 शोध पत्रों तथा 48 पुस्तकों के प्रकाशन किया साथ ही वेदों व उपनिषदों का अनुवाद किया। डॉ0 मठपाल जी पर्यावरण के प्रहरी के रूप में भी कार्य किया और भीमताल में वृक्षारोपण के कार्य को एक मिशन की भाँति संपन्न किया।

इं0 गाँ0 रा0 क0 के0 माननीय सदस्य सचिव प्रो0 सच्चिदानन्द जोशी जी सम्बोधित करते हुए

वर्ष 1983 में मठपाल जी ने भीमताल में लोक संस्कृति संग्रहालय की स्थापना की। कला एवं

संस्कृति के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान हेतु वर्ष 2006 में भारत सरकार द्वारा मठपाल जी को पद्मश्री सम्मान से विभूषित किया गया।

प्रदर्शनी के अंतर्गत आदि दृश्य विभाग के विभगाध्यक्ष प्रो0 बी0 एल0 मल्ला एवं डॉ0 यशोधर मठपाल के संवाद के कुछ अंशों को भी सम्मिलित किया गया जिसमें प्रो0 मल्ला जी ने डॉ0 मठपाल से प्रागैतिहासिक पुरास्थल भीमबेटका पर अध्ययन, शैलचित्रों में प्रयुक्त रंगों के विषय सम्बन्धी प्रश्न रखे। डॉ0 मठपाल जी ने बताया की उन्होंने भीमबेका पर लगभग 8 वर्षों तक कार्य किया तथा लगभग 1 वर्ष भीमबेटका पुरास्थल पर व्यतीत कर यहाँ के शैलाश्रयों में चित्रित अनेक कालों के चित्रों का अध्ययन किया तथा लगभग 6214 चित्रों की प्रतिकृति जलरंग के माध्यम से बनायी।

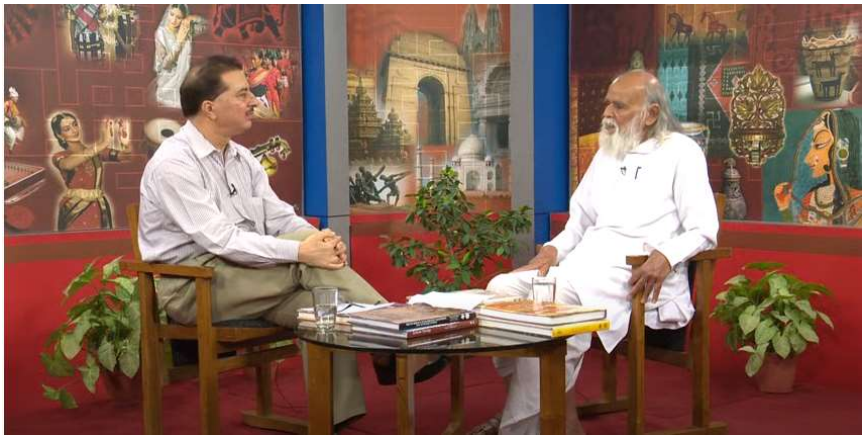

प्रो0 बी0 एल0 मल्ला एवं डॉ0 यशोधर मठपाल के मध्य संवाद

उन्होंने बताया की भीमबेटका के शैलचित्रों में कुल 16 प्रकार के रंगों का प्रयोग किया गया था जो स्थानीय रूप से उपलब्ध भूगर्भिक प्रकृतिक खनिजों से बनाये गए थे जिनमें हरा रंग कॉपर ऑक्साइड, लाल रंग आयरन ऑक्साइड (गेरू), हेमेटाइट,सफेद रंग लाइम स्टोन (चुना पत्थर), आदि। गेरू के अनेक प्रकार स्थानीय रूप से उपलब्ध थे जिस कारण लाल रंग में विविधता देखने को मिलती है। डॉ0 वाकणकर जी ने हरे रंग से चित्रित उच्च पुरापाषाण कालीन चित्रों के काल का निर्धारण भीमबेटका के उत्खनन से उच्च पुरापाषाण कालीन स्तर से प्राप्त कॉपर ऑक्साइड खनिज के प्राप्ति के आधार पर किया। रंग को तैयार करने हेतु इन

खनिजों में जानवरों की चर्बी व पेड़ों से प्राप्त गोंद को मिलाया जाता था। इसके अतिरिक्त वर्ष 1988 में शैल कला विषय पर कार्य करने के सम्बन्ध में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के साथ कार्य करने हेतु संस्था को धन्यवाद ज्ञापित किया।

उपरोक्त प्रदर्शिनी के माध्यम से अधिकतम विद्वतजनों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों आदि को जोड़ने के उद्देश्य से विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों, शैक्षणिक संस्थानों तथा संस्कृति मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय आदि से सम्बंधित अनेक संस्थाओं को ई/मेल, वाट्सअप, ट्विटर, फोन आदि के माध्यम से अवगत किया गया फलतः लगभग 150 से अधिक लोग फेसबुक तथा लगभग 100 लोग यू–ट्यूब के माध्यम से लाइव जुड़े बाद में प्ळछब्। फेसबुक पेज पर लगभग 5000 एवं यू–ट्यूब पर पर लगभग 600 लोगों ने देखा व सकारात्मक प्रतिक्रियाऐं दी।

IGNCA facebook link- https://www.facebook.com/IGNCA/videos/2577398969027223/

IGNCA You Tube link- https://www.youtube.com/watch?v=YOudaRrQAFY

आभार

प्रस्तुत आभासी प्रदर्शनी का आयोजन इं० गाँ० रा० क० के० के माननीय सदस्य सचिव प्रो० सच्चिदानंद जोशी जी के प्रेरणास्वरूप तथा आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 बंशी लाल मल्ला जी के सफल मार्गदर्शन व आदि दृश्य विभाग के परियोजना सहायक, श्री प्रवीण कुमार सी0 के0, श्रीमती रीता रावत, सुश्री सुपर्णा डे एवं श्री प्रमोद कुमार आदि के सम्मिलित सराहनीय प्रयास के परिणामस्वरूप संभव हो सका। अंततः संचार केन्द्र (इं० गाँ० रा० क० के०) का कोटिशः धन्यवाद जिनके सहयोग से प्रदर्शनी को डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रदर्शन करने हेतु स्वरूप प्रदान किया जा सका।

डॉ0 दिलीप कुमार सन्त
अनुसंधान अधिकारी
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली